वीणा हरि सहस्रबुद्धे

अकादेमी पुरस्कारः हिन्दुस्तानी गायन

श्रीमती वीणा सहस्रबुद्धे का जन्म 14 सितम्बर 1948 को उत्तर प्रदेश के कानपुर में हुआ था। श्रीमती सहस्रबुद्धे ने संगीत में अपना प्रशिक्षण ग्वालियर घराने के विष्णु दिगम्बर पालुस्कर के विद्यार्थी अपने पिता शंकर श्रीपाद बोदास से शुरू किया था। उनके भाई काशीनाथ शंकर बोदास ने उन्हें बचपन में पढ़ाया था। घर में अध्यापन के अलावा, उन्हें बलवंत राय भट्ट, वसंत ठाकर, और गजाननबुवा जोशी ने उनकी कला को निखारने का काम किया था।

श्रीमती वीणा सहस्रबुद्धे को दशकों से अग्रणी ख़्याल कलाकार के रूप में पहचाना जाता है आपने किराना और जयपुर स्कूलों की प्रतिभाओं के साथ ग्वालियर घराने की विशेषताओं को अपनी गायकी में बनाए रखा है। इसे उत्कृष्ट प्रकार से बनाया गया है जो श्रोताओं का आकर्षित करता है। भजन सुनाने की आपकी कला श्रोताओं को बहुत आकर्षित करती है। संगीता की शिक्षा देना भी श्रीमती सहस्रबुद्धे के लिए गंभीर विषय रहा है, और आपने यह शिक्षण कार्य घर तथा एस.एन.डी.टी. कॉलेज ऑफ आर्ट्स फॉर वूमन, पुणे (1985–90), ललित कला केन्द्र, पुणे (1994), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे (2002–04), और आई.आई.टी. कानपुर (2009) सहित संस्थानों में किया है। आपने ग्वालियर में तानसेन समारोह, पुणे में सवाई गंधर्व, और स्टॉकहोल्म में गायन महोत्सव सहित कई प्रतिष्ठित स्थलों पर प्रस्तुति पेश की है। आपने नामी कम्पनियों के माध्यम से कई सी.डी. निकाली हैं। ख़्यालों, भजनों तथा तरानों के अलावा, इनमें संगीत पर परिचर्चाएं, वक्तव्य–प्रदर्शनियां, और संस्कृत स्तोत्रों के वाचन भी शामिल हैं। आपने अपना डॉक्टरेट शोध तराना, *तरान्याविषयी कही संगीतिक विचार* (1988), अपने परिवार के ख़्याल रचनाओं की पुस्तक, *नाद निनाद* (2000), और अपने पिता तथा अपने भाई द्वारा लेखनों का संग्रह, *उत्तराधिकार* (2000), प्रकाशित करवाया है।

श्रीमती वीणा सहस्रबुद्धे को उनके कार्य के लिए कई सम्मान प्राप्त हैं जिनमें प्रमुख उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (1993) है।

श्रीमती वीणा सहस्रबुद्धे को हिन्दुस्तानी गायन संगीत में अपने योगदान के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।